फ़ैज़ाने रमज़ान क़िस्त नम्बर 6

Jannat Ka Anokha Darakht (Hindi)

जन्नत का अनोखा दरख़्त

कुल सफ़हात 16

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

जन्नत का अनोखा दरख़्त

येह रिसाला **(जन्नत का अनोखा दरख़्त)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की
मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. **98987 32611** • Email : **hindibook@dawateislamihind.net**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

जन्नत का अनोखा दरख़्त

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत : फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के सिवा कोई साया नहीं होगा, तीन शख़्स अ़र्शे इलाही के साए में होंगे। अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह कौन लोग होंगे ? इर्शाद फ़रमाया : (1) वोह शख़्स जो मेरे उम्मती की परेशानी दूर करे (2) मेरी **सुन्नत** ज़िन्दा करने वाला (3) मुझ पर कसरत से **दुरूद शरीफ़** पढ़ने वाला। (اَلْبُدُوْرُ السَّافِرَة ص ١٣١ حديث ٣٦٦)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नफ़्ल रोज़ों के दीनी व दुन्यवी फ़वाइद : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़र्ज़ रोज़ों के इ़लावा **नफ़्ल रोज़ों** की भी आ़दत बनानी चाहिये कि इस में बे शुमार दीनी व दुन्यवी फ़वाइद हैं और सवाब तो इतना है कि मत पूछो बात ! आदमी का जी चाहे कि बस रोज़े रखते ही चले जाएं। **दीनी फ़वाइद** में ईमान की हिफ़ाज़त, जहन्नम से नजात और जन्नत का हुसूल शामिल हैं और जहां तक दुन्यवी फ़वाइद का तअ़ल्लुक़ है तो दिन के अन्दर खाने पीने में सर्फ़ होने वाले वक़्त और अख़्राजात की बचत, पेट की इस्लाह और बहुत सारे अमराज़ से हिफ़ाज़त का सामान है। और तमाम फ़वाइद की अस्ल येह है कि रोज़ेदार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है।

www.dawateislami.net

रोज़ादारों के लिये बख़्शिश की बिशारत : अल्लाह तबारक व तआला पारह 22 **सूरतुल अह़ज़ाब** की आयत नम्बर 35 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَالصّٰٓئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِیْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِیْنَ اللّٰهَ كَثِیْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا ﴿۳۵﴾

(پ۲۲، الاحزاب:۳۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और रोज़े वाले और रोज़े वालियां और अपनी पारसाई निगाह रखने वाले और निगाह रखने वालियां और **अल्लाह** को बहुत याद करने वाले और याद करने वालियां इन सब के लिये **अल्लाह** ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है।

وَالصّٰٓئِمِیْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ (**तरजमा :** और रोज़े वाले और रोज़े वालियां) की तफ़्सीर में ह़ज़रते अ़ल्लामा अबुल बरकात **अ़ब्दुल्लाह** बिन अह़मद नसफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : इस में फ़र्ज़ और नफ़्ल दोनों क़िस्म के रोज़े दाख़िल हैं। मन्क़ूल है : जिस ने हर महीने अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़) के तीन रोज़े रखे वोह रोज़े रखने वालों में शुमार किया जाता है। (تفسیرِ مَدارك ج۲ ص۳۴۵)

अल्लाह तबारक व तआला पारह 29 **सूरतुल ह़ाक़्क़ह** की आयत नम्बर 24 में इर्शाद फ़रमाता है :

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِیْٓـًٔۢا بِمَاۤ اَسْلَفْتُمْ فِی الْاَیَّامِ الْخَالِیَةِ ﴿۲۴﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो रचता हुवा सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा।

www.dawateislami.net

हज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मुह़द्दिस देह्लवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى आयते करीमा के इस ह़िस्से : (गुज़रे हुए दिनों में) के तह़्त लिखते हैं : या'नी दुन्या के दिनों में से गुज़श्ता दिनों में या उन दिनों में जो कि खाने और पीने से ख़ाली थे और वोह **रमज़ानुल मुबारक** के रोज़ों के दिन हैं और दूसरे मस्नून रोज़ों के अय्याम जैसे अय्यामे बीज़ (या'नी चांद की 13, 14, 15 तारीख़), अ़रफ़ा (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम) का दिन, रोज़े आ़शूरा, पीर का दिन, जुम्आ़रात का दिन और शबे बराअत का दिन वग़ैरा । (تفسیرِ عزیزی ج۲ص۱۰۳) **हज़रते** सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ (गुज़रे हुए दिनों में) से मुराद रोज़ों के दिन हैं अब मत़लब येह हुवा कि तुम खाओ और पियो उस के बदले में जो तुम ने रोज़े के दिनों में **अल्लाह तआ़ला** की रिज़ा में ख़ुद को खाने पीने से रोका। (लिहाज़ा जन्नत में खाना पीना दुन्या में खाने पीने से रुकने का बदल हो जाएगा) (تفسیر رُوحُ البَیان ج۷ص۱۴۳)

"माहे रमज़ान मुबारक" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से नफ़्ली रोज़ों के फ़ज़ाइल पर 13 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 जन्नत का अनोखा दरख़्त : जिस ने **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा उस के लिये **जन्नत** में एक दरख़्त लगा दिया जाएगा जिस का फल **अनार** से छोटा और **सेब** से बड़ा होगा, वोह शह्द जैसा मीठा और ख़ुश ज़ाएक़ा होगा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत रोज़ादार को उस दरख़्त का फल खिलाएगा। (مُعْجَم کَبِیْر ج۱۸ص۳۶۶حدیث۹۳۵)

www.dawateislami.net

(2) 40 साल का फ़ासिला दोज़ख़ से दूरी : **जिस** ने सवाब की उम्मीद रखते हुए **एक नफ़्ल रोज़ा** रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दोज़ख़ से **चालीस साल** (की मसाफ़त के बराबर) दूर फ़रमा देगा।

(جَمعُ الجَوامع ج۷ص۱۹۰حدیث۲۲۲۵۱)

(3) दोज़ख़ से 50 साल की मसाफ़त तक दूरी : **जिस** ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ के लिये एक दिन का **नफ़्ल रोज़ा** रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और दोज़ख़ के दरमियान एक तेज़ रफ़्तार सुवार की पचास सालह मसाफ़त (या'नी फ़ासिले) तक दूर फ़रमा देगा।

(کَنز العُمّال ج۸ ص۲۵۵ حدیث ۲۴۱۴۹)

(4) ज़मीन भर सोने से भी ज़ियादा सवाब : **अगर** किसी ने **एक दिन नफ़्ल रोज़ा** रखा और **ज़मीन भर सोना** उसे दिया जाए जब भी इस का सवाब पूरा न होगा, इस का सवाब तो क़ियामत ही के दिन मिलेगा।

(آبو یَعْلٰی ج۵ص۳۵۳حدیث۶۱۰۴)

(5) जहन्नम से बहुत ज़ियादा दूरी : **जिस** ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में एक दिन का फ़र्ज़ रोज़ा रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना सातों ज़मीनों और आस्मानों के माबैन (या'नी दरमियान) फ़ासिला है। और जिस ने एक दिन का नफ़्ल रोज़ा रखा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना ज़मीन व आस्मान का दरमियानी फ़ासिला है।

(مَجمَعُ الزَّوائِد ج۳ص۴۴۵حدیث۵۱۷۷)

(6) कव्वा बचपन ता बुढ़ापा उड़ता रहे यहां तक कि..... : **जिस** ने एक दिन का रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल करने के लिये रखा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम से इतना दूर कर देगा जितना कि एक

www.dawateislami.net

कव्वा जो अपने बचपन से उड़ना शुरूअ़ करे यहां तक कि बूढ़ा हो कर मर जाए। (اَبو يَعْلٰى ج١ ص٣٨٣ حديث ٩١٧)

7 रोज़े जैसा कोई अ़मल नहीं : हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिस के सबब जन्नत में दाख़िल हो जाऊं।" फ़रमाया : "रोज़े को ख़ुद पर लाज़िम कर लो क्यूं कि इस की मिस्ल कोई अ़मल नहीं।" रावी कहते हैं : "हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के घर दिन के वक़्त मेहमान की आमद के इलावा कभी धूआं न देखा गया (या'नी आप दिन को खाना खाते ही न थे रोज़ा रखते थे)।" (الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج٥ ص١٧٩ حديث ٣٤١٦)

8 रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे : صُوْمُوْا تَصِحُّوا۔ या'नी रोज़ा रखो तन्दुरुस्त हो जाओगे। (مُعْجَم اَوْسَط ج٦ ص١٤٦ حديث٨٣١٢)

9 महशर में रोज़ादारों के मज़े : क़ियामत के दिन जब रोज़ेदार क़ब्रों से निकलेंगे तो वोह रोज़े की बू से पहचाने जाएंगे, उन के लिये दस्तर ख़्वान लगाया जाएगा और उन्हें कहा जाएगा : "खाओ ! कल तुम भूके थे, पियो ! कल तुम प्यासे थे, आराम करो ! कल तुम थके हुए थे।" पस वोह खाएंगे पियेंगे और आराम करेंगे हालां कि लोग हिसाब की मशक़्क़त और प्यास में मुब्तला होंगे। (جَمْعُ الْجَوامِع ج١ ص٣٣٤ حديث٢٤٦٢)

10 .....तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा : जो لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ कहते हुए इन्तिक़ाल कर गया तो वोह जन्नत में दाख़िल होगा। और जिस ने किसी दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये **रोज़ा** रखा, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की

www.dawateislami.net

रिज़ा के लिये **सदक़ा** किया, इसी पर उस का ख़ातिमा हुवा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा। (مُسند امام احمد ج۹ ص۹۰ حدیث۲۳۳۸٤)

11 जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है : **हज़रते** सय्यिदतुना उम्मे उ़मारा बिन्ते का'ब رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : सुल्ताने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे यहां तशरीफ़ लाए, मैं ने खाना पेश किया तो इर्शाद फ़रमाया : "तुम भी खाओ !" मैं ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो फ़रमाया : "जब तक रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है फ़िरिश्ते उस रोज़ादार के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।" (ترمذی ج۲ ص۲۰۵ حدیث۷۸۵)

12 हड्डियां तस्बीह़ करती हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इर्शाद फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) आओ नाश्ता करें।" तो (ह़ज़रते सय्यिदुना) बिलाल رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़र्ज़ की : "मैं रोज़े से हूं।" तो **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है।" फिर फ़रमाया : "ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मा'लूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने कुछ खाया जाए तब तक उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं, उसे फ़िरिश्ते दुआ़एं देते हैं।" (ابنِ ماجه ج۲ ص ۳٤۸ حدیث ۱۷٤۹)

13 रोज़े में मरने की फ़ज़ीलत : "**जो** रोज़े की ह़ालत में मरा, **अल्लाह तआ़ला** क़ियामत तक के लिये उस के ह़िसाब में रोज़े लिख देगा।" (اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۳ ص٥٠٤ حدیث ٥٥٥٧)

www.dawateislami.net

नेक काम के दौरान मरने की सआ़दत : ख़ुश नसीब है वोह मुसल्मान जिसे रोज़े की ह़ालत में मौत आए बल्कि किसी भी नेक काम के दौरान मौत आना अच्छी बात है। मसलन बा वुज़ू या दौराने **नमाज़** मरना, **सफ़रे मदीना** के दौरान रूह़ क़ब्ज़ होना, दौराने ह़ज मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا, मिना, मुज़्दलिफ़ा या अ़रफ़ात शरीफ़ में इन्तिक़ाल, **दा'वते इस्लामी** के सुन्नतों की तरबियत के **मदनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरे सफ़र के दौरान दुन्या से रुख़्सत होना, येह सब अ़ज़ीम सआ़दतें हैं जो कि सिर्फ़ ख़ुश नसीबों को ह़ासिल होती हैं। इस सिल्सिले में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की नेक तमन्नाएं बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ैसमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : "सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इस बात को पसन्द करते थे कि किसी अच्छे काम मसलन ह़ज, उ़म्रह, ग़ज़्वा (जिहाद), रमज़ान के रोज़े वग़ैरा के दौरान मौत आए।" (حِلْيَةُ الْاَولياء ج٤ ص١٢٣)

कालू चाचा की ईमान अफ़रोज़ वफ़ात : नेक काम के दौरान मौत से हमआग़ोश होने की सआ़दत सिर्फ़ मुक़द्दर वालों का ह़िस्सा है। इस ज़िम्न में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** के इज्तिमाई सुन्नते ए'तिकाफ़ की एक **मदनी बहार** मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और ज़िन्दगी भर के लिये दा'वते इस्लामी के **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता रहने का अ़ज़्मे मुसम्मम कर लीजिये। मदीनतुल औलिया **अह़मदआबाद** शरीफ़ (गुजरात, अल हिन्द) के **कालू चाचा** (उ़म्र तक़रीबन 60 बरस) **रमज़ानुल मुबारक** (1425 सि.हि., 2004

www.dawateislami.net

सि.ई) के आख़िरी अ़शरे में शाही मस्जिद (शाहे आ़लम, अह़मदआबाद शरीफ़) में **मो'तकिफ़** हो गए। यूं तो येह पहले ही से मदनी माह़ोल से वाबस्ता थे मगर **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ ए'तिकाफ़ पहली ही बार किया था। **ए'तिकाफ़** में बहुत कुछ सीखने का मौक़अ़ मिला और साथ ही साथ **दा'वते इस्लामी** के **72 मदनी इन्आ़मात** में से **पहली सफ़ में नमाज़** पढ़ने की तरग़ीब वाले दूसरे **मदनी इन्आ़म** पर अ़मल का ख़ूब जज़्बा मिला। 2 शव्वालुल मुकर्रम या'नी **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़, सुन्नतों की तरबियत के तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में **आ़शिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतों भरा सफ़र किया। **मदनी क़ाफ़िले** से वापसी के पांच या छे[6] दिन बा'द या'नी 11 शव्वालुल मुकर्रम 1425 सि.हि. 24 नवम्बर 2004 सि.ई. को किसी काम से बाज़ार जाना हुवा, गो मसरूफ़िय्यत थी मगर ताख़ीर की सूरत में **पहली सफ़** फ़ौत होने का ख़दशा था, लिहाज़ा सारा काम छोड़ कर मस्जिद का रुख़ किया और अज़ान से क़ब्ल ही **मस्जिद** में पहुंच गए, वुज़ू कर के जूं ही खड़े हुए फ़ौरन गिर पड़े, **कलिमा शरीफ़** और **दुरूदे पाक** पढ़ते हुए उन की रूह क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई, سُبْحٰنَ اللّٰه ! اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْن जिस को मरते वक़्त **कलिमा शरीफ़** पढ़ने की सआ़दत नसीब हो जाए اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ उस का **क़ब्रो ह़श्र** में बेड़ा पार है। चुनान्चे नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : **"जिस का आख़िरी कलाम لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه हो, वोह दाख़िले जन्नत होगा।"** (ابو داؤد ج۳ ص ۲۰۵ حدیث۳۱۱۶) मज़ीद दा'वते इस्लामी

www.dawateislami.net

के मदनी माहोल की बरकत सुनिये : इन्तिक़ाल के चन्द रोज़ बा'द उन के फ़रज़न्द ने ख़्वाब में देखा कि **वालिदे मर्हूम** सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए मुस्कुराते हुए फ़रमा रहे हैं : **बेटा ! दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में लगे रहो कि इसी मदनी माहोल की बरकत से मुझ पर करम हुवा है।**

मौत फ़ज़्ले ख़ुदा से हो ईमान पर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़
रब की रहमत से जन्नत में पाओगे घर, मदनी माहोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सख़्त गरमी में रोज़े की फ़ज़ीलत (हिकायत) : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को एक समुन्दरी जिहाद में भेजा। एक अंधेरी रात में जब कश्ती के बादबान उठा दिये गए तो हातिफ़े ग़ैब ने पुकारा : "ऐ सफ़ीने वालो ! ठहरो ! क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर क्या लिया है ?" हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "अगर तुम बता सकते हो तो ज़रूर बताओ।" उस ने कहा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मए करम पर ले लिया है कि जो शदीद गरमी के दिन अपने आप को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये प्यासा रखे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सख़्त प्यास वाले दिन (या'नी

www.dawateislami.net

क़ियामत में) सैराब करेगा।" रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की आ़दत थी कि सख़्त गरमी के दिन रोज़ा रखते थे। (اَلتَّرْغِيْب وَالتَّرْهِيْب ج٢ص٥١حديث١٨)

क़ियामत में रोज़ादार खाएंगे : ताबेई बुज़ुर्ग हज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन रबाह़ अन्सारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى फ़रमाते हैं, मैं ने एक राहिब से सुना : "क़ियामत के दिन दस्तर ख़्वान बिछाए जाएंगे, सब से पहले रोज़ेदार उन पर से खाएंगे।" (ابنِ عَساكِر ج٥ص٥٣٤)

आ़शूरा के रोज़े के फ़ज़ाइल

"शहीदे करबला" के नव हुरूफ़ की निस्बत से आ़शूरा को वाक़ेअ़ होने वाले 9 अहम वाक़िआ़त

《1》 **आ़शूरा** (या'नी **10** मुहर्रमुल ह़राम) के दिन हज़रते सय्यिदुना **नूह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी 《2》 इसी दिन हज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की लग़्ज़िश की तौबा क़बूल हुई 《3》 इसी दिन हज़रते सय्यिदुना यूनुस عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की क़ौम की तौबा क़बूल हुई 《4》 इसी दिन हज़रते सय्यिदुना **इब्राहीम ख़लीलुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पैदा हुए 《5》 इसी दिन हज़रते सय्यिदुना **ईसा रूहुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

पैदा किये गए[1] ﴾6﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **मूसा कलीमुल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को नजात मिली और फ़िरऔन अपनी क़ौम समेत ग़रक़ हुवा[2] ﴾7﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूसुफ़** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को क़ैदख़ाने से रिहाई मिली ﴾8﴿ इसी दिन ह़ज़रते सय्यिदुना **यूनुस** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मछली के पेट से निकाले गए[3] ﴾9﴿ सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को मअ़ शहज़ादगान व रुफ़क़ा तीन दिन भूका प्यासा रखने के बा'द इसी **आ़शूरा** के रोज़ दश्ते करबला में निहायत बे रह़मी के साथ शहीद किया गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"या हुसैन" के छ हुरूफ़ की निस्बत से
मुह़र्रमुल ह़राम और आ़शूरा के रोज़ों के 6 फ़ज़ाइल

﴾1﴿ **हुज़ूरे** अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : "रमज़ान के बा'द मुह़र्रम का रोज़ा अफ़्ज़ल है और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ सलातुल्लैल (या'नी रात के नवाफ़िल) है।"

(مسلم ص٥٩١ حديث١١٦٣)

﴾2﴿ **त़बीबों** के त़बीब, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

---

[1]: الفردوس ج١ ص٢٢٣ حديث ٨٥٦۔ [2]: بُخارِی ج٢ ص٤٣٨ حديث ٣٣٩٧، ٣٣٩٨۔

[3]: فيض القدير ج٥ ص٢٨٨ تحت الحديث ٧٠٧٥۔

www.dawateislami.net

का फ़रमाने रह़मत निशान है : **मुह़र्रम** के हर दिन का रोज़ा एक महीने के रोज़ों के बराबर है। (مُعجَم صغیر ج ۲ ص ۷۱)

यौमे मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : ﴾3﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا का इर्शादे गिरामी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब मदीनतुल मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में तशरीफ़ लाए, यहूद को **आ़शूरे** के दिन रोज़ादार पाया तो इर्शाद फ़रमाया : येह क्या दिन है कि तुम रोज़ा रखते हो ? अ़र्ज़ की : येह अ़ज़मत वाला दिन है कि इस में **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और उन की क़ौम को **अल्लाह तआ़ला** ने नजात दी और फ़िरऔ़न और उस की क़ौम को डुबो दिया, लिहाज़ा मूसा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बत़ौरे शुक्राना इस दिन का **रोज़ा** रखा, तो हम भी **रोज़ा** रखते हैं। इर्शाद फ़रमाया : **मूसा** عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की मुवाफ़क़त करने में ब निस्बत तुम्हारे हम ज़ियादा ह़क़दार और ज़ियादा क़रीब हैं। तो **सरकारे मदीना** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुद भी रोज़ा रखा और इस का हुक्म भी फ़रमाया। (مسلم ص۵۷۲ حدیث۱۱۳۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक से मा'लूम हुवा कि जिस रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कोई ख़ास ने'मत अ़त़ा फ़रमाए उस की यादगार क़ाइम करना दुरुस्त व मह़बूब है कि इस त़रह़ उस ने'मते उ़ज़्मा की याद ताज़ा होगी और उस का शुक्र अदा करने का सबब भी होगा ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ (پ۱۳،ابرٰهیم:۵)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** के दिन याद दिला।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं कि "بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ" से वोह दिन मुराद हैं जिन में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों पर इन्आ़म किये जैसे कि बनी इसराईल के लिये मन्न व सल्वा उतारने का दिन, **ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के लिये दरिया में रास्ता बनाने का दिन। इन अय्याम में सब से बड़ी ने'मत के दिन **सय्यिदे आ़लम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की **विलादत व मे'राज** के दिन हैं इन की याद क़ाइम करना भी इस आयत के हुक्म में दाख़िल है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 479 मुलख़्ख़सन)

ईदे मीलादुन्नबी और दा'वते इस्लामी : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह, शहन्शाहे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के **यौमे विलादत** से बढ़ कर कौन सा दिन "यौमे इन्आ़म" होगा ? बेशक तमाम ने'मतें आप ही के तुफ़ैल हैं और आप का यौमे विलादत तो ईदों की भी **ईद** है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** की त़रफ़ से दुन्या में ला ता'दाद मक़ामात पर हर साल **ईदे मीलादुन्नबी** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم शानदार त़रीक़े पर मनाई जाती है। रबीउ़ल अव्वल

www.dawateislami.net

शरीफ़ की 12वीं शब को अ़ज़ीमुश्शान **इज्तिमाए़ मीलाद** का इन्ऊ़क़ाद होता है और बिल ख़ुसूस मेरे हुस्ने ज़न के मुताबिक़ उस रात दुन्या का सब से बड़ा "इज्तिमाए़ मीलाद" बाबुल मदीना में मुन्अ़क़िद होता और **मदनी चेनल** पर बराहे रास्त (Live) टेलेकास्ट किया जाता है। ईद के रोज़ मरह़बा या मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की धूमें मचाते हुए बे शुमार जुलूसे मीलाद निकाले जाते हैं जिन में लाखों आ़शिक़ाने रसूल शरीक होते हैं।

ईदे मीलादुन्नबी तो ईद की भी ईद है

बिल यक़ीं है ईदे ईदां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 380)

आ़शूरा का रोज़ा : ﴾4﴿ सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "मैं ने सुल्ताने दो जहान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को किसी दिन के **रोज़े** को और दिन पर फ़ज़ीलत दे कर जुस्त जू (रग़बत) फ़रमाते न देखा मगर येह कि **आ़शूरे** का दिन और येह कि **रमज़ान** का महीना।" (بُخاری ج۱ص۶۵۷حدیث۲۰۰۶)

यहूदिय्यों की मुख़ालफ़त करो : ﴾5﴿ नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : यौमे आ़शूरा का रोज़ा रखो और इस में यहूदिय्यों की मुख़ालफ़त करो, इस से पहले या बा'द में भी एक दिन का रोज़ा रखो। (مُسْنَد اِمَام اَحْمَد ج۱ص۵۱۸ حدیث۲۱۵۴) **आ़शूरे** का

रोज़ा जब भी रखें तो साथ ही नवीं या ग्यारहवीं मुहर्रमुल ह़राम का रोज़ा भी रख लेना बेहतर है।

﴾6﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है, **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्शिश निशान है : मुझे **अल्लाह** पर गुमान है कि आ़शूरे का रोज़ा एक साल क़ब्ल के गुनाह मिटा देता है। (مُسلِم ص٥٩٠ حديث١١٦٢)

सारा साल घर में बरकत : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 166 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"इस्लामी ज़िन्दगी"** सफ़ह़ा 131 पर **मुफ़स्सिरे** शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : मुह़र्रम की **नवीं** और **दसवीं** को रोज़ा रखे तो बहुत सवाब पाएगा, बाल बच्चों के लिये **दसवीं** मुह़र्रम को ख़ूब अच्छे अच्छे खाने पकाए तो اِنْ شَآءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ साल भर तक घर में बरकत रहेगी। बेहतर है कि खिचड़ा पका कर ह़ज़रते शहीदे करबला सय्यिदुना **इमामे हुसैन** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की फ़ातिह़ा करे बहुत मुजर्रब (या'नी फ़ाएदा मन्द, मुअस्सिर व आज़्मूदा) है। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 131)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

क़ब्र में सवाब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब इन्सान मर जाता है तो उस से उस के अ़मल का सवाब कट जाता है मगर तीन अ़मल से (कि उन का सवाब मरने के बा'द भी मिलता रहता है) (1) सदक़ए जारिया का सवाब (2) या उस इ़ल्म का सवाब जिस से लोग फ़ाएदा उठाएं (3) या नेक औलाद जो उस के लिये दुआ़ करती रहे।

(مشکاۃ المصابیح، ۱/۶۰، حدیث: ۲۰۳)

01082101

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina

Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Triconia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net